Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 03, July-September 2022, pp. 119-123

हिन्दी समाचार पत्रों का भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में योगदान

डॉ. अनिता शर्मा*

सार

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम मे हिन्दी पत्रकारिता का विशिष्ठ योगदान हैं। हिन्दी पत्रकारिता के आदि नायकों ने युगबोध व सामाजिक चेतना के क्षेत्र में अपने महत्व को पहचाना। इसी कारण समाचार पत्रों ने मध्यम वर्गीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशा के प्रत्येक पक्ष को 19वीं शताब्दी मे हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। हिन्दी पत्रकारिता के विकास की यात्रा को हम भारतीय राष्ट्रवाद की कहानी भी कह सकते हैं। इस समय में अधिकांश हिन्दी भाषी समाचार पत्र कलकत्ता और आगरा से प्रकाशित होते थे। आगरा इस समय शिक्षा का बड़ा केन्द्र था। इस समय के पत्र, पत्रिकाओं की कोई निश्चित शैली नही थी और अधिकांश समाचार पत्र मासिक थे। इसके पश्चात पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होने लगा। भारतीय समाचार पत्रों ने उन मूक भावनाओं को अभिव्यक्ति दी जिन्हे जन साधारण बोल नही सकता था और यही कारण है कि 18वी, 19वीं औ 20वीं शताब्दी के हिन्दी समाचार पत्र जनमानस की सवेंदनाओं को दर्शाते है। इन समाचार पत्रों ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

शब्दकोशः *दीवानी, औपनिवेशिक, सेर, रैय्यत, उपनिवेशवादी।*

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उदित राष्ट्रवाद को समझने का एक मर्म वाक्य है, हिन्दी हिन्दू और हिन्दूस्तान हिन्द के निवासी हिंदू और हिन्दूस्तान में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा हिन्दी हैं। 8वीं शताब्दी में मध्य एशिया से अनेक आक्रमणकारी भारत में आने लगे। इन लोगों ने भारत को भारत ना कहकर हिन्द या हिन्दूस्तान कहना शुरू किया और यहाँ उत्तर भारत में बोली जाने वाली खडी भाषा (हिन्दी) थी। इसके क्षेत्रवार अनेक रूप थे। संस्कृत भाषा के शब्दों से मेल खाती यह भाषा हिन्दी थी जो अनेक यूरोपीय भाषाओं से भी मेल खाती थी। भारत में विस्तृत क्षेत्र में बोली जाने वाली इस भाषा का भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में विस्तृत योगदान है कश्मीर से लेकर मध्य भारत व उत्तर पूर्वी भारत में बोली जाने के कारण यह भाषा अत्यन्त लोकप्रिय थी। भारत में बोली जाने वाली इस भाषा से पूर्व मुगल काल में राजकार्य की भाषा के रूप में फारसी व ब्रिटिश शासन काल मे अंग्रेजी भाषा राजकार्य की भाषा रही। एक सरल भाषा के रूप में हिन्दी को राष्ट्रवाद की वाहिनी के रूप में स्थापित किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

19वीं शताब्दी के राष्ट्रवादी नेताओं व समाज सुधारकों को हिन्दी भाषा के प्रति विशेष लगाव था। भारतीयों को संगठित करने में इसका विशेष योगदान रहा। केशवचन्द्र सेन ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीयों में एकता बनाये रखने के लिये यह प्रस्ताव दिया कि ऐसी भारतवर्ष की भाषा बनायी जाये जो भारतीयों को एक कर सके। इस उद्देश्य के लिए हिन्दी भाषा को चुना गया क्योंकि वह उत्तर भारत, उत्तरपूर्वी भारत व मध्य भारत में बोली जाने वाली भाषा थी।

---

* सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध, जयपुर, राजस्थान।

भारतीय प्रेस की स्थापना और विकास

1757 के पश्चात भारत के राजनीतिक में आमूल–चूल परिर्वतन आया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जो अब तक एक व्यापारिक कम्पनी थी, अब उसका भारतीय राजनीति में पदार्पण हो गया था। 1764 के पश्चात भारतीय दीवानी अधिकार इलाहबाद की सन्धि के द्वारा कम्पनी को दे दिये गये और यही से कम्पनी बंगाल की अधिपति बन गई। कम्पनी की इस सफलता ने भारत में उसके राजनीतिक अधिकार का मार्ग प्रशस्त किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत की राजनीतिक स्थिति का यह भान हो चुका था, कि कम्पनी को भारत में चुनौती देने वाली कोई शक्ति नही है। भारतीय राज्य आपस में धर्म–जाति के आधार पर बंटे हुये थे और कम्पनी की शक्ति से प्रभावित होकर धीरे–धीरे सभी राज्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसके साथ राजनैतिक संबंध बनाने के इच्छुक थे। समय के साथ नैतिक–अनैतिक माध्यमों से कम्पनी ने अपने प्रभाव का विस्तार कर अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार भारत में कर लिया। इस समय कम्पनी को भारतीय समाज से भी चुनौती मिलने की आशंका नही थी। भारतीय समाज धनी–निर्धन, जमींदार और मजदूर, धर्म व जाति के आधार पर बंटा हुआ था। वर्गीकृत सामाजिक स्तर ने अंग्रेजो को और अधिक बल व सहयोग दिया।

ब्रिटिश शासन का प्रभाव आर्थिक पक्ष पर होना स्वाभाविक ही था। बंगाल के दीवानी अधिकार प्राप्त होने के पश्चात कम्पनी ने आर्थिक रूप से शोषण करना शुरू कर दिया था। इस समय राजस्व के तीन स्त्रोत थे–श्मालश (जिसमें भू–राजस्व व नमक कर शामिल था), श्सेरश (आयात–निर्यात कर तथा पथ कर), तीसरा श्बाजी जमाश (जिसमें जुर्माना व आबकारी कर) सम्मिलित थे। मुगल काल में कृषि उत्पादन जीविका का प्रमुख साधन था। इस कारण सिंचाई के साधनों पर भी राज्य पूरा ध्यान देते थे। उपनिवेशवादी काल में प्रजा हित पर कोई ध्यान नही दिये गये। इस वजह से कृषि विकास गौण हो गया। अंग्रेजो ने मालगुजारी, रैय्यतवाड़ी, माहलवाड़ी बन्दोबस्त लागू किये पर इन व्यवस्थाओं ने किसानों की कमर तोड़ दी। उन पर ऋण ग्रस्तता इतनी बढ़ गई कि वो खेती से विमुख होने लगे। भारत वर्ष से धन का पलायन शुरू हुआ और सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश आर्थिक रूप से पिछड़ गया। भारत के समृद्ध कहे जाने वाले प्रांत बंगाल, बिहार व उड़ीसा अकाल, भूखमरी और शोषण की चपेट में थे। सम्पूर्ण देश शोषण का शिकार था परन्तु एक दूसरे की दशा का किसी को भान तक नही था।

संचार के साधनों के अभाव से गाँव, शहर और कस्बे आपस में जुडे हुये नही थे। एक स्थान की खबर दूसरे स्थान पहुँचने में महीनो लग जाते थे। ऐसे समय में जनता को जोड़ने का कार्य प्रेस ने बखूबी किया।

इस समय तक प्रेस का प्रभाव जन मानस पर पड़ चुका था। इंग्लैण्ड का औपनिवेशिक साम्राज्य अपनी पकड और मजबूत कर रहा था वही जनता में विद्रोह के स्वर और गहरे हो रहे थे। अंग्रेजी प्रशासन भारतीयों की चेतना पर बोखलाया हुआ था। अतः 1878 में कर्जन ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित कर प्रेस की स्वतन्त्रता पर आघात किया। इसका एक कारण यह भी था, कि 1857 की क्रांति को अंग्रेज भुला नही पाये थे और वो यह चाहते थे कि उस घटना की पुनरावृति ना हो क्योंकि समाचार पत्रों ने जनता को जोड़ा था और उनमे जागृति लाने में प्रबल योगदान दे रहा था। अतः प्रेस पर पाबंदी लगाकर जनता को राजनीति से दूर रखने का प्रयास किया। 1857 की क्रान्ति भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम थी। इसके पश्चात भी भारतीयों की मनोस्थिति ठीक नही थी, वे अपने अधिकारों से अनभिज्ञ थे, पर क्रान्ति के पश्चात उन्हे अपने अधिकारों की समझ तो थी पर अपने अधिकार मांगने की दशा व ज्ञान नही था। ऐसे समय में भारतीय समाचार पत्रिका का पहला अध्याय शुरू हुआ। इस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1857 में श्कविवचन सुधाश तथा 1873 में श्हरिश्चन्द्रश नामक पत्रिका प्रकाशित की ।इन पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से समाज मे जागरूकता आयी और अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध क्रान्ति करने की प्रबल इच्छा हुईया अंग्रेज मुक्त भारत के विचार ने अंग्रेजी साम्राज्य के विरोध में जनाधार तैयार किया।

इस समय तक भारत में समाचार पत्र पत्रिकाओं का विकास नही हुआ था और अंग्रेजी शासन के विरूद्ध लिखने का मतलब अपने विनाश को आमन्त्रित करना था। भारतेन्दु की प्रेरणा से भारतीयों मे एक हौसला

आया और इसका परिणाम था बालकृष्ण भट्ट ने 1877 में 'हिन्दी प्रदीप' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। यह समाचार पत्र अंग्रेजी प्रशासन और उनके दमन की कहानियॉ भारतीयों तक पहुँचाता था। जिसमें अग्रेंजी शोषण और उसके प्रभाव बतलाये गये पर अग्रेंजी प्रशासन उनके इस कार्य से नाराज हो गया और उसे नोटिस दिया गया। इसके पश्चात भट्ट ने अपनी कविता 'बम क्या है' का प्रकाशन किया जिससे नाराज होकर अग्रेंजी सरकार ने उन पर जुर्माना लगा दिया पर धन ना होने के कारण वह यह जुर्माना ना भर सके और इसके परिणाम स्वरूप उनके समाचार पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया।

1878 वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के द्वारा भारतीय समाचार पत्रों पर अनेक पाबंदीया लगा दी गई क्योंकि समाचार पत्र ना केवल अग्रेंजी प्रशासन की सच्चाई को उजागर कर रहे थे, वरन भारतीय समाज को भी आईना दिखा रहे थे। अग्रेंजी श्फूट डालो राज करोश की नीति को जनता के सामने प्रस्तुत कर रहे थे। इस समय में 1877 में एक साप्ताहिकी समाचार पत्र 'खिचड़ी समाचार' ने अंग्रेजों की हिन्दू–मुस्लिम को बांटने की नीति पर कड़ा प्रहार किया और समाचार पत्र के सम्पादक माधव प्रसाद धवन (मिर्जापुर) को सरकार के कोप का प्रसाद मिला। इस समय के एक और समाचार पत्र श्विद्याधर्म दीपिकाश का प्रकाशन गोरखपुर मंझगाव से किया गया। जिसका सम्पादन चन्द्रशेखर धर ने किया था। भारतीय जनमानस को राजनैतिक रूप से जागृत करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इस समय में क्षैत्रीय स्तर पर अनेक समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित 'क्षत्रिय' पत्रिका ने जिसका सम्पादन खड़ग बहादुर महल ने किया था, इस पत्रिका ने तत्कालीन समाज की वर्ण व्यवस्था पर प्रकाशित लेखो के माध्यम से सामाजिक कुरूतियों पर आघात किया। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक भारत की आर्थिक दशा अत्यधिक शोचनीय हो गयी थी। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले देश में भूखमरी, बेरोजगारी और अकालों ने जनता कि कमर तोड दी थी। भारतीयों की बढ़ती जनसंख्या ने कृषि पर भार बढ़ा दिया था और अंग्रेजी प्रशासनिक नीतियों ने भारतीय उद्योगो और कुटीर धन्धों का विनाश कर दिया था। धन का पलायन, बेरोजगारी, कुटीर उद्योगों का नाश व कृषि का पतन भारतीय अर्थव्यवस्था की बिगड़ी दशा को बता रहे थे। भारतीयों में विक्षोभ बढ़ता जा रहा था। भारतीयों का विक्षोभ कम करने हेतु 1885 में कांग्रेस का गठन हुआ और इसके परिणाम स्वरूप भारतीयों में राजनीतिक चेतना का अविर्भाव हुआ वही, उन्हे राजनीतिक रूप से नेतृत्व व दिशा प्रदान करने हेतु गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौराजी, बाल गंगाधर तिलक, लाला राजपतराय जैसे नेता मिले । जिन्होने जनता की उत्कंठा को समझते हुये उनके विचारों को नेतृत्व प्रदान किया। वही भारतीय समाचार पत्रों को भी नई दिशा दी।

इस समय में उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर से बद्रीनारायण चौधरी ने 1900 ई. में श्कादम्बिनीश का प्रकाशन किया। यह मासिक पत्र था। इस पत्र के माध्यम से चौधरी जी ने भारतीयों की आर्थिक दशा को सामने रखा और निरन्तर पडने वाले अकाल व दुर्भिक्ष के मुश्किल दौर मे भी जनता के शोषण व अंग्रेजो की दमनपूर्ण नीति को बतलाया। जनता पर इसका प्रभाव पड़ा और एक बडा वर्ग जनता के समर्थन में आया। इस दौरान दिल्ली दरबार पर बहाये गये पैसे पर कांग्रेस व अन्य दलों ने अंग्रेजी प्रशासन के विरूद्ध स्वर उठाये। विद्रोह के स्वरो की गूंज इंग्लैण्ड तक सुनायी दी। राजनैतिक स्तर पर समाचार पत्रों द्वारा जनता का साथ देने पर समय–समय पर समाचार पत्रिकाओं के सम्पादको को जुर्माना या कारागृहों मे डाला जाता था। यह वह दौर था जब ब्रिटिश हुकूमत बंगाल विभाजन का आधार तैयार कर रही थी। ऐसे समय में समाचार पत्रों ने अंगेजी प्रशासन की मनोदशा से भारतीयो ंको अवगत कराया कि प्रशासन की दृष्टि से नही बंगाल का विभाजन धर्म के आधार पर किया जा रहा है। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, कृष्णकुमार मित्र, आदि अन्य नेताओं ने विभाजन के प्रस्ताव के खिलाफ अखबार व पत्रिकाओं के माध्यम से आन्दोलन छेड़ा। भारत सरकार और गृह सचिव को अनेक विरोधी याचिकाएँ भेजी गयी। इसका प्रभाव यह हुआ कि बड़े–बडे जमीदार जो ब्रिटिश हुकूमत के साथ थे, वे अब कांग्रेस के साथ हो गये। 1903 से 1905 ई. की अवधि मे आवेदनबाजी, ज्ञापनबाजी, जनसभा और प्रेस के माध्यम से बडी तेजी से प्रचार किया गया ताकि बंगाल विभाजन के विरूद्ध जनमत तैयार किया जा सके। इस दौरान बंगाल विभाजन की

घोषणा हो गई ओर स्वदेशी व बहिष्कार जैसे आन्दोलन चलाये गये। आन्दोलन लम्बा चला पर जनता की जागरूकता और मिडिया के बढते दबाव के कारण अंग्रेजी सरकार को बंगाल विभाजन का निर्णय रद्द करना पडा। बीसवीं शताब्दी में हिन्दी समाचार पत्र एक बड़ी साहित्यिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आये। इस समय मे महाराष्ट्र जन जागृति का केन्द्र बन रहा था। तिलक द्वारा केसरी समाचार पत्र के माध्यम से उग्रवादी राजनीति को लोकप्रिय बनाया गया। जिसने जनता के मन में अपने लिये स्थान बनाया। इस समय 'अभ्युदय ' 'प्रताप' तथा 'कर्मयोगी' समाचार पत्र भी भारतीय राजनीति व जन मानस के बीच अपना स्थान बना रहे थे।

1907 मे 'स्वराज्य' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन शांति नारायण भटनागर के द्वारा किया गया। इसी साल बसंत पंचमी पर मदन मोहन मालवीय ने श्अभ्युदयश समाचार पत्र निकाला 20 वी सदी में समाचार पत्रों ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया बल्कि इन्हे अपनी स्पष्टगोईता के कारण अनेक यातनाएँ भी झेलनी पडी। इन समाचार पत्रों में श्स्वदेशश समाचार पत्र गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रयासों से गोरखपुर से निकाला गया जो अंग्रेजो के आँख की किरकीरी बन गया। इसके प्रभाव से युवा लड़के लडकियां भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े। अब भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में श्क्रान्तिकारीश युग की शुरूवात हुई । 1915 के पश्चात भारतीय राजनीति में बडा परिवर्तन आया। इस समय में गांधी जी ने भारतीय राजनीति मे प्रवेश किया और शीघ्र ही उनका वर्चस्व कांग्रेस मे बढ गया। इस समय विश्व भी एक भयंकर संकट से ग्रसित हो गया था। प्रथम विश्वयुद्ध की घोषणा ने भारतीय राजनीति व नेताओं की धडकने बढ़ा दी। इस समय सम्पूर्ण भारत में किसान आन्दोलन, व अनेक जन जातीय आन्दोलन चल रहे थे और हिन्दी राष्ट्रीय आन्दोलन की राष्ट्रीय भाषा बन गई थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी समाचार पत्रों का महत्व दिन–प्रतिदिन बढता जा रहा था। अब राजनीतिक चेतना मध्यमवर्ग तक ही ना रहकर ग्रामीण व श्रमिकों तक पहुंच गई थी। राष्ट्रीय आन्दोलन को गॉवों तक पहुचाने में हिन्दी भाषी समाचार पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस समय के समाचार पत्रों में आज (1926), कर्मवीर (1924), स्वदेश(1921), जागरण(1929), स्वराज्य(1931), हरिजन(1932) आदि प्रमुख थे।

इनमे से अधिकांश समाचार पत्र गांधी जी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्ही के मार्गदर्शन में अपनी आजादी की लडाई लडना चाहते थे। 1921 असहयोग आन्दोलन, 1930 सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी प्रशासन की दमनपूर्ण कार्यवाही के बावजूद इन्होने जनता तक देश की परिस्थिति और घटनाओं को पहुचांया और उन्हे राष्ट्रीय आन्दोलन से जोडे रखा। 1930 के नमक आन्दोलन के समय सम्पूर्ण देश गांधी जी के नेतृत्व में अंग्रेजी प्रशासन के विरूद्ध एकजुट था। नमक कानून पर ब्रिटिश सरकार की कार्यवाही भी जनता के मनोबल को नही तोड सकी। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन चलता रहा। इस समय में मन्दिर प्रवेश, हरिजन उद्धार आन्दोलन आदि में भी समाचार पत्रों ने जनता तक वास्तविकता को पहुंचाया गया। गांधी के सम्पादन में निकलने वाले श्हरिजनश ने जनता में समय–समय पर सोहार्द को बढ़ाया व उनके अधिकारों की मांग कीं।

1942 तक आते–आते देश के हालात चिंताजनक हो गये थे। भारत को दूसरे विश्वयुद्ध में शामिल करने की जुगत में अंग्रेजी प्रशासन लगा हुआ था। भारत पर निरन्तर जापान के आक्रमण का संकट गहरा रहा था। ऐसे समय में गांधी जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन छेड दिया और 'करो या मरो' का नारा दिया। ऐसे समय में अंग्रेजी सरकार ने अनेक समाचार पत्रों से उनके अधिकार छिन कर उनका प्रकाशन बन्द कर दिया और अपनी मंशा का परिचय दिया। जिनमें से एक महत्वपूर्ण समाचार पत्र 'आज' भी था।

इस दौरान सभी बडे नेताओं को भारत छोडों आन्दोलन से पूर्व गिरफ्तार कर लिया गया। ऐसे समय में समाचार पत्र जनता के मार्गदर्शक व नेतृत्व कर्त्ता बने क्योंकि इन्ही के माध्यम से सूचनाऐं व कार्यक्रमों की रूपरेखा जनता तक पहुॅची। 1942 के बाद जनमानस के दबाव के कारण अंग्रेजी प्रशासन ने भारत की स्वतन्त्रता संबंधी मांग की ओर ध्यान दिया। 1947 में माउन्टबेटन योजना की घोषणा के पश्चात भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। जिसमें समाचार पत्रों का योगदान अविस्मरणीय है।

लगभग 150 वर्षों के इतिहास में समय–समय पर समाचार पत्रों ने अपनी शैली अपने स्वरूप अपनी भाषा को परिष्कृत किया, पर हिन्दी भारतीय जनमानस को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली भाषा रही। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन मे हिन्दी भाषा व हिन्दी समाचार पत्रों के इस जुड़ाव ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में जनता को जोड़ा। यह सुनिश्चित है कि हिन्दी भाषायी समाचार पत्रों ने 20वीं शताब्दी में महत्पूर्ण भूमिका निभाई और 21वीं शताब्दी में डिजिटल दौर मे भी समाचार पत्रों के प्रति वही आर्कषण बना हुआ हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अय्यंगर, ए.एस. (2001). दॉ रोल आफ प्रेस एण्ड इण्डियन फ्रीडम स्ट्रगल : थ्रू दा गांधीयन इराः नई दिल्ली, ए.पी.एच. पब्लिकेशन
2. चन्द्र, विपिन, (2014). हिस्ट्री ऑफ मॉडन इंडियाः नई दिल्ली, ओरयिन्ट ब्लैक स्वेन प्राइवेट लिमिटेड
3. चन्द्र, विपिन एवं अन्य (1999). भारत का स्वतन्त्रता संघर्षः हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
4. चन्द्रा, बी. एम. मुखर्जी, ए. मुखर्जी, के. एन. पणिक्कर और एस. महाजन, (1989). इण्डियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेडेंसः नई दिल्ली पेंगुइन बुक्स।
5. चक्रवर्ती, रंजन, (2019). न्यू हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एन आउटलाइनः सुरजीत पब्लिकेशन
6. ग्रोवर, बी.एल./अल्का मेहता (2018). ए न्यू लुक एट मॉडन इण्डियाः नई दिल्ली, एस चांद पब्लिकेशन
7. ग्रोवर, बी.एल. (2002). आधुनिक भारत का इतिहासः नई दिल्ली एस. चाँद एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड।
8. इण्डियन प्रेस एण्ड फ्रीड़म स्ट्रगल, (1993). नई दिल्ली, ओरियन्ट लागॅमेन पब्लिकेशन।
9. जैन, के. सी. (2008). आधुनिक भारत का इतिहासः नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
10. खुराना, के. एल. (2019). मॉडन इण्डियाः आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एड्यूकेशन पब्लिशर।
11. लाल, बसंत कुमार, समकालीन भारतीय दर्शनः नई दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास।
12. महाजन, वी.डी., (2016). मॉडन इण्डियन हिस्ट्रीः फ्रॉम 1707 टू दी प्रेजेन्ट डेः नई दिल्ली, एस. चाँद एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड।
13. महाजन, वी.डी., (2010). मॉडन इण्डियन हिस्ट्रीः नई दिल्ली, एस चाँद कम्पनी लिमिटेड।
14. नायक, गणेश्वर, ए स्टॅडी ऑफ माडन इण्डियन हिस्ट्रीः नई दिल्ली, अनमोल पब्लिकेशन।
15. नौटियाल, विकास, (2004). आधुनिक भारत का इतिहासः नई दिल्ली, वासु पब्लिकशन।
16. सेन, शैलेन्द्र नाथ, (2010). एन एडवांस हिस्ट्री ऑफ मार्डन इडियाः –लक्ष्मी पब्लिकेशन ।
17. शर्मा /पावा, (2001). आधुनिक भारत का इतिहासः जयपुर पब्लिशिंग हाउस।
18. व्यास, मदन गोपाल,(1972). दॉ भारतेन्दुः हिज् लाइफ एण्ड टाइमः सागर पब्लिकेशन।
19. व्यास, मदन गोपाल, (1990). फ्रीड़म मूवमेन्ट एण्ड दा प्रेसः मजिठियाः क्रियेएटन पब्लिकेशन।
20. (2019). ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ मॉडन इण्डियाः नई दिल्ली, स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन।

♦❐♦